CEDSI TIMES

Your Skilling Partner...

मध्य प्रदेश की यूनिवर्सिटी ने दूध की पैदावार बढ़ाने वाले मवेशियों के लिए चॉकलेट पेश की

- मध्य प्रदेश के जबलपुर में नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय ने 'नर्मदा वीटा मिन लिक' नामक एक चॉकलेट-मिश्रित पशु चारा बनाया है जो दूध उत्पादन को बढ़ावा देने, पशु स्वास्थ्य को बढ़ाने और एक लागत प्रभावी विकल्प होने का दावा करता है।
- विश्वविद्यालय मवेशियों के लिए वैकल्पिक पोषण आहार का अध्ययन और शोध कर रहा था। विश्वविद्यालय के पशु पोषण विभाग के निदेशक सुनील नायक कहते हैं, "हम कुछ ऐसा बनाना चाहते थे जो स्थानीय डेयरी किसानों के लिए भी सस्ती और सुलभ हो।"
- नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति सीता प्रसाद तिवारी ने कहा, "पशु पोषण विभाग को मवेशियों के लिए एक पौष्टिक भोजन के पूरक के उत्पादन के साथ चुनौती दी गई थी, और विशेषज्ञ चॉकलेट लिक के साथ आए, जो मवेशियों की पोषण संबंधी मांगों को पूरा करता है।"
- विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने दो अलग-अलग उत्पाद बनाए हैं। पहला है नर्मदा मिन, एक खनिज संयोजन, और दूसरा है नर्मदा वीटा मिन लिक, एक चॉकलेट फ़ीड जिसमें गुड़ और अन्य सामग्री शामिल है। दोनों उत्पादों को आईएसओ प्रमाणन दिया गया है (आईएसओ 9001:2015)।

मिल्मा ने बाढ़ प्रभावित डेयरी किसानों के लिए राहत पैकेज की घोषणा की

- मिल्मा के तिरुवनंतपुरम क्षेत्रीय सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ (TRCMPU) ने क्षेत्र के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में संबद्ध डेयरी किसानों की मदद के लिए 1 करोड़ रुपये के आपातकालीन राहत पैकेज की घोषणा की है।
- संयोजक एन भासुरंगन ने कहा कि टीआरसीएमपीयू की प्रशासनिक समिति की यहां हुई आपात बैठक में इस संबंध में तत्काल प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिए एक करोड़ रुपये का प्रारंभिक आवंटन किया गया।
- बैठक में आपदा में अपने मवेशियों को खोने वाले किसानों को 25,000 रुपये तक मुआवजे के रूप में प्रदान करने का निर्णय लिया गया है।

मदर डेयरी का लक्ष्य दिल्ली में अपने वितरण का विस्तार करना

- मदर डेयरी ने मार्च 2023 तक दिल्ली में कियोस्क और फ्रैंचाइज़ी स्टोर के रूप में 700 से अधिक विशेष ग्राहक संपर्क बिंदु बनाने की योजना बनाई है।
- कंपनी के पास अब 1800 कस्टमर टच पॉइंट हैं और इसे वित्त वर्ष 2022-23 तक 2500 टच पॉइंट तक बढ़ाने का लक्ष्य है।
- कंपनी दिल्ली में दूध और दूध उत्पादों की सबसे बड़ी खुदरा विक्रेता है और 'सफल' ब्रांड के तहत फल और सब्जियां और 'धारा' ब्रांड के तहत खाना पकाने के तेल भी बेचती है।

मदर डेयरी के प्रबंध निदेशक मनीष बंदलिश ने एक बयान में कहा, "हमारे उपभोक्ता संपर्क बिंदु पिछले कुछ वर्षों में राजधानी क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए हैं। मदर डेयरी की दुकानें आरडब्ल्यूए, सोसाइटियों, सैन्य क्षेत्रों, अस्पतालों, कॉलेजों आदि के प्रमुख क्षेत्रों में पाई जा सकती हैं और हमारे ग्राहकों की रोजमर्रा की मांगों को पूरा करने में मदद करती हैं।

डेयरी मवेशियों के संक्रामक रोग के इलाज के लिए लागत प्रभावी दवा विकसित: विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय

- विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने कहा कि गुजरात के एक किसान द्वारा साझा की गई स्वदेशी ज्ञान प्रणाली का उपयोग करके मास्टिटिस के इलाज के लिए एक पॉली-हर्बल और लागत प्रभावी दवा विकसित की गई है।
- नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन (एनआईएफ) द्वारा विकसित मस्तीरक जेल का उद्योग भागीदार राकेश फार्मास्युटिकल्स के माध्यम से व्यावसायीकरण किया गया है। जेल का उपयोग प्रभावित थन सतह पर सामयिक अनुप्रयोग के लिए किया जाता है।
- जेल को देश के विभिन्न हिस्सों में पशु चिकित्सा दवाओं की आपूर्ति करने वाले मेडिकल स्टोर से खरीदा जा सकता है।
- स्वदेशी ज्ञान प्रणाली एक अधिक स्थायी विकल्प की पेशकश कर सकती है और स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में इन दवाओं को एकीकृत करने के लिए उनका वैज्ञानिक मूल्यांकन आवश्यक है।

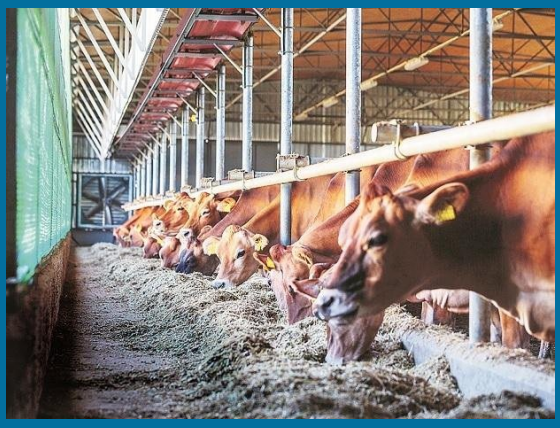

DVARA ई-डेरी और जन लघु वित्त बैंक ने लघु और मध्यम किसानों के वित्त के लिए गठजोड़ किया

एग्री फिनटेक फर्म DVARA ई-डेरी सोलूशन्स प्राइवेट लिमिटेड ने डिजिटल तकनीकों का उपयोग करके वित्तीय और पशु प्रबंधन समाधानों के साथ छोटे और मध्यम किसानों को सशक्त बनाकर छोटे डेरी किसानो की सेवा के लिए जन लघु वित्त बैंक (जन SFB) के साथ एक सहयोग में प्रवेश किया है।

मुख्य विशेषताएं:

- भारत भर के ग्रामीण और कृषि क्षेत्रों में जन SFB के व्यापक शाखा नेटवर्क के माध्यम से DVARA ई-डेरी पशुऋण के लिए ऋण और हामीदारी प्रक्रिया का विस्तार करना चाहता है।
- DVARA ई-डेरी की डिजिटल पहचान (ID) टैग सुरभि ई-टैग थूथन पहचान के आधार पर सटीक मवेशी पहचान प्रदान करेगी।
- **'डिजिटल मूल्यांकन'** पर आधारित सुरभि स्कोर डेरी गतिविधियों और अनुकूलित पशु प्रबंधन सिफारिशों के आधार पर पशुऋण की हामीदारी का पूरक है। इससे डेरी किसानों को अपनी आजीविका में सुधार करने और घरेलु वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलती है।

केरल में पशुपालन और डेयरी क्षेत्रों में बाढ़ से ₹2 करोड़ का नुकसान

- केरल के पशुपालन विभाग ने बुधवार 20 अक्टूबर को बारिश के कहर से इस क्षेत्र को ₹2 करोड़ का नुकसान होने की सूचना दी।
- नुकसान में 91 मवेशी, 42 बकरियां, 25032 मुर्गियां, 274 मवेशी शेड, 29 मुर्गी कॉप और 5 लाख रुपये के मवेशी शामिल हैं।
- केरल सरकार में पशुपालन मंत्री जे. चिंचुरानी ने नुकसान का आकलन करने के लिए पशुपालन और डेयरी विकास विभागों के अधिकारियों की एक बैठक बुलाई और जिला स्तर पर किसानों को वित्तीय सहायता का आश्वासन दिया।
- किसानों को मुआवजे के लिए अपना आवेदन संबंधित पशु चिकित्सालय या डेयरी विकास विभाग के ब्लॉक स्तरीय कार्यालय में 10 दिनों के भीतर दाखिल करना होगा।

स्टार्ट-अप: 26 वर्षीय सिविल इंजीनियर ने गाय का गोबर, दूध बेचने के लिए कॉर्पोरेट नौकरी छोड़ी; लाखों कमाता है

एक इंजीनियर है जो अपने माता-पिता के साथ डेयरी फार्म चलाता है और न केवल दूध और खाद बेचकर कमाता है, बल्कि गायों को नहलाने के बाद गौशाला से निकलने वाला पानी भी बेचता है! दक्षिण कन्नड़ जिले के पुत्तूर तालुक के मुंदरू गांव के रहने वाले 26 वर्षीय जयगुरु आचार हिंदर ने विवेकानंद कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंडटेक्नोलॉजी से सिविल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है। 2019 में, उन्होंने अपनी कॉर्पोरेट नौकरी छोड़ने और अपने पिता के साथ जुड़ने और खेत की उत्पादकता बढ़ाने के लिए एक तकनीकी मोड़ देने का फैसला किया।

आचार कहते हैं, "मैं डेयरी का विस्तार करने और इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान राजस्व बढ़ाने के लिए नए-नए तरीके आजमाने की सोच रहा था।" डेयरी अब बहुत अच्छी तरह से विस्तारित और स्थापित है। मवेशियों की संख्या बढ़कर 130 हो गई है और परिवार के पास 10 एकड़ का एक भूखंड भी है जहां सुपारी मुख्य फसल है। आचार ने फार्म डेयरी में कुछ ऐसे नवाचार लाए कि परिवार आसानी से प्रति माह 10 लाख रुपये कमाता है।

सूखा गोबर

घंटों ऑनलाइन शोध के बाद, आचार ने पंजाब के पटियाला की यात्रा की और गाय के गोबर को सुखाने वाली मशीन खरीदी। वह हर महीने इस सूखे गोबर की करीब 1,000 बोरी बेचता है। आस पास और आसपास के गांवों के किसान उससे बड़ी मात्रा में खरीदते हैं।

गायके गोबर का घोल

गोबर, गोमूत्र और गायों को नहलाने के बाद जो पानी इकट्ठा किया जाता है, उसका मिश्रण घोल होता है। इस पानी को टैंकरों में जमा कर ले जाया जाता है। आचार के पास एक टैंकर है जिसमें 7,000 लीटर तक घोल है। वह प्रतिदिन इस मिश्रण का 1 टैंकर मात्रा में बेचता है। जो भी इसे खरीदता है वह करीब 8 से 11 रुपये प्रति लीटर चुकाता है। घोल को खरीदार के खेत में ले जाया जाता है और संयंत्र के आधार पर डाला जाता है।

गोनंदाजल

उन्होंने इसका व्यापक रूप से ऑनलाइन अध्ययन किया और सफलता पूर्वक इस उत्पाद का निर्माण कर रहे हैं। गोनंदाजल मूलरूप से एक उच्च पोषक तत्व है जो फसलों के विकास को बढ़ावा देता है। गाय के मरने के बाद, लाश को जलाने या दफनाने के बजाय, गोमूत्र, छाछ, और कई अन्य वस्तुओं और पानी की गणना के अनुपात के साथ एक विशाल टैंक में छोड़ दिया जाता है। इसे बंद कर दिया जाता है और 6 से 7 महीने तक सड़ने के लिए छोड़ दिया जाता है जिसके बाद तरल उर्वरक के रूप में तरल का उपयोग किया जाता है।

इसके अलावा वह रोजाना 750 लीटर दूध और हर महीने करीब 30 से 40 किलो घी भी बेचते हैं। उन्होंने आगे कहा, "उत्पादों की एक संपूर्ण जैविक श्रृंखला देने से न केवल हमारे राजस्व में वृद्धि होती है, बल्कि हमें संतुष्टि भी मिलती है कि हम पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं पहुंचा रहे हैं।" वह निकट भविष्य में दुग्ध उत्पादों के उत्पादन के लिए एक इकाई स्थापित करने की योजना बना रहा है। “सरकार द्वारा विभिन्न सब्सिडी और स्टार्टअप ऋण और लाभों ने नई परियोजनाओं को शुरू करने में बहुत मदद की है। यह एक ऐसा काम है जिसमें साप्ताहिक अवकाश और अवकाश नहीं है, मुझे पता है। लेकिन मैं यह भी जानता हूं कि कुछ सालों में यह पूरी तरह से आत्मनिर्भर हो जाएगा और सेटअप बिना ज्यादा मेहनत के चलेगा। और किसी भी चीज़ से बढ़कर, अपना खुद का बॉस होना सबसे बड़ी अनुभूति है”, युवक कहता है।